

सफलता की कहानी- श्री देदाराम पटेल

एक सफल व्यवसाय के लिये बहुपोषक तत्वअहार बट्टिका स्वरोजगार का अच्छा माध्यम है जिसमें कम लागत व समय में अधिक लाभ कमा सकते हैं। काजरी संस्थान की इस तकनीक में विश्वास दिखाते हुये गाजनगढ़ गाँव के कृषक श्री देदाराम पटेल ने 9,800 रुपये के शुरूआती निवेश से पोषक बट्टिका का वाणिज्यिक उत्पादन 2009 में शुरू किया। श्री देदाराम पटेल ने इस व्यवसाय को जारी रखा और आस-पास के कृषक भाइयों को भी प्रशिक्षित किया और इस की



महत्ता इतनी बन गयी कि इस किसान को राज्य सरकार ने 2014 में उत्कृष्ट प्रगतिशील किसान का पुरस्कार प्रदान किया। आज श्री देदाराम पटेल पाली जिले का एक प्रगतिशील कृषक माना जाता है जो लगातार कृषकों को स्वरोजगार के लिये ग्रामीण स्तर पर ही प्रशिक्षित करता रहता है। वर्तमान में श्री देदाराम पटेल जिले में लगभग 33 युवा कृषकों को प्रशिक्षित कर चुके हैं जो अपना व्यवसाय गांव व ढाणियों में

चला रहे हैं।

यह बट्टिका मारवाड़ क्षेत्र में काफी प्रसिद्ध हो गयी है और इसकी काफी मांग है। वर्तमान में श्री पटेल ने इस उद्यम को राज्य सरकार से पंजीकृत करवा लिया है और खुद व परिवार के अन्य सदस्यों के लिये रोजगार सृजन करते हुए सफलता पूर्वक लगभग 25,000 रुपये मासिक आय प्राप्त कर रहे हैं। श्री देदाराम वैज्ञानिक विधि से उन्नत किस्मों का प्रयोग करते हुए खेती करते हैं और

हर फसल की बम्पर पैदावार लेते हैं। इन की सफलता को देखने के लिये उच्च अधिकारी व प्रगतिशील किसान दूसरे राज्यों से भी गांव आते हैं। के.वि.के. के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में श्री देदाराम जी नियमित रूप से पशु आहार बट्टिका एवं दाना बनाने का प्रायोगिक प्रशिक्षण देते हैं तथा उप महानिदेशक, शिक्षा, भाकृअनुप, नई दिल्ली, निदेशक, सी.एस.डब्ल्यू.आर.आई. अविकानगर, निदेशक, काजरी,



जोधपुर, उप महानिदेशक, एन.आर.एम., कुलपति, पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय, बीकानेर आदि श्री पटेल के गांव में आकर उनको सफलता की बधाईयाँ दे चुके हैं।

Leap from Subsistence to Profitable Farming under Rainfed Thar Desert

The agriculture production system in the North-western part of Rajasthan is mostly rainfed, mono-cropped and of subsistence type because of climatic constraints. But even under these conditions, Sh. Satta Ram Choudhary of Jasti Village in Barmer district of Rajasthan has successfully achieved twin objectives of profitability and livelihood security by growing combination of fruits and crops. Earlier Shri Satta Ram along with his 5 family members used to survive by growing subsistence crops like pearl millet, mung bean, moth bean, cucurbits etc. on his farm and he often had to work in nearby sand stone mines or at construction sites for his livelihood. In the year 2011, he came in contact with the Central Arid Zone Research Institute, Jodhpur through some friend and came to know about interventions in agriculture and horticulture fields. Following construction of a water harvesting pond of 10 lakh litre capacity with the government support he started following the scientific advisories of scientists of CAZRI. He constructed a small water tank at a height of 5 m in the middle of his farm for storing water for use in irrigation through drip irrigation using gravitational force. Firstly, he grew fruit plants and then followed intercropping of mung bean and moth bean in initial years. A total of 800 plants of different fruit species (Ber, lasora and sour lime) supplied by CAZRI were planted by him in 2012. With the technical input and constant supervision of CAZRI scientists, he started getting the



returns from orchard from third year onwards (about Rs. 1.0-1.5 lakh from ber and Rs.0.15-0.25 lakh from lasora fruits) that has since increased to a net profit of Rs. 0.8-1.0 lakh/year. Sh. Satta Ram said "Cultivation of crops and horticulture together and using harvested rainwater for supplemental irrigation has increased resilience to climatic vagaries and also have regular source of income from my farm". Besides, the monetary benefits, his family member are now getting year round employment. Inspired by initial profits, he



is now planning to bring more area under cultivation of fruits like pomegranate that can provide better economic returns. He shares his story of scientific interventions in growing of crops and horticulture with his friends and relatives. Many farmers are following his advice in his village and around. Looking to his innovativeness in adoption of improved technology, he has been selected as CAZRI Kisan Mitra.